www.researchvidyapith.com ISSN (Online): 3048-7331

Research Vidyapith International Multidisciplinary Journal

(International Open Access, Peer-reviewed & Refereed Journal)

(Multidisciplinary, Monthly, Multilanguage)

*** Vol-2* *Issue-8* *August 2025***

समावेशी शैक्षिक परिप्रेक्ष्य में बौद्धिक विकलांगता वाले विद्यार्थियों का मनोसामाजिक अनुकूलनः शिक्षक प्रभावशीलता, विद्यालयीय व्यवहार एवं अभिभावक सहभागिता का अनुभवजन्य अध्ययन

डॉ. अनामिका कुमारी

सहायक प्राध्यापक, शिक्षा विभाग, शाहपुर पटोरी महाविद्यालय, समस्तीपुर, ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय, दरभंगा

सार–

विशेष आवश्यकता वाले विद्यार्थियों के मनोसामाजिक अनुकूलन पर शिक्षक प्रभावशीलता, समावेशी व्यवहार और अभिभावक सहभागिता का संयुक्त प्रभाव अभी तक पर्याप्त अनुभवजन्य रूप से परीक्षण नहीं हुआ है। विशेषकर भारतीय संदर्भ में ऐसे अध्ययन सीमित हैं। प्रस्तुत अध्ययन का लक्ष्य इन तीन कारकों के बौद्धिक विकलांगता वाले विद्यार्थियों के सामाजिक, व्यवहारिक और कक्षा–सहभागिता के अनुकूलन पर प्रभाव का परीक्षण करना है। अध्ययन में वर्णनात्मक–सहसंबंधात्मक शोध अभिकल्प अपनाया गया। उद्देश्यपूर्ण प्रतिदर्श विधि द्वारा 30 बौद्धिक विकलांगता वाले विद्यार्थी, 10 शिक्षक तथा 15 अभिभावक सम्मिलित किए गए। Teacher Sense of Efficacy Scale, Index for Inclusion, Vineland Adaptive Behavior Scales ,oa Parent–School Partnership Scale जैसी मानकीकृत मापनियों से डेटा एकत्रित किया गया। t&test ,वं Pearson सहसंबंध तकनीक द्वारा विश्लेषण किया गया। परिणामों से यह स्पष्ट हुआ कि उच्च शिक्षक प्रभावशीलता, सकारात्मक समावेशी व्यवहार एवं सक्रिय अभिभावक सहभागिता विद्यार्थियों के मनोसामाजिक अनुकूलन तथा कक्षा–सहभागिता से सांख्यिकीय रूप से महत्वपूर्ण रूप में संबद्ध हैं। अध्ययन से प्राप्त निष्कर्ष समावेशी शिक्षा के सिद्धांतों एवं अभ्यासों को सुदृढ़ करने हेतु उपयोगी शैक्षिक संकेत प्रदान करते हैं।

मुख्य शब्द– बौद्धिक विकलांगता, मनोसामाजिक अनुकूलन, शिक्षक प्रभावशीलता, समावेशी शिक्षा, अभिभावक सहभागिता

1. प्रस्तावना–

समावेशी शिक्षा के विचार से प्रत्येक विद्यार्थीकृचाहे उसकी क्षमताएं किसी भी स्तर पर होकृमुख्यधारा के विद्यालय में समान अधिकार, सम्मान और समर्थन के साथ सीखने में भाग ले सकता है। यह दृष्टिकोण न केवल शिक्षा तक पहुँच सुनिश्चित करता है, बल्कि विद्यार्थियों के मनोसामाजिक, व्यवहारिक और भावनात्मक विकास को भी सुदृढ़ बनाता है। बौद्धिक विकलांगता वाले विद्यार्थी ऐसी परिस्थितियों में अतिरिक्त चुनौतियों का सामना करते हैं, विशेषतः तब जब कक्षा–पर्यावरण और शिक्षक व्यवहार उनके अनुकूल नहीं होते। UNESCO एवं अन्य अंतरराष्ट्रीय संगठनों ने समावेशी शिक्षा को एक मानवीय और शैक्षिक अधिकार बताया है, जो सामाजिक एकता, समानता और सभी के लिए गुणवत्तापूर्ण शिक्षा सुनिश्चित करता है (UNESCO, 1994)।

समावेशी शिक्षा केवल कक्षा का भौतिक हिस्सा नहीं है; यह एक ऐसा शैक्षिक वातावरण है जिसमें विविधतापूर्ण आवश्यकताओं वाले विद्यार्थियों के लिए सकारात्मक, सहयोगात्मक, संवेदनशील एवं उपलब्धि–मुखी अनुभव उपलब्ध कराए जाते हैं। बौद्धिक विकलांगता वाले विद्यार्थियों का मनोसामाजिक अनुकूलनकृजिसमें संप्रेषण कौशल, सामाजिक सहभागिता, आत्म–विश्वास, दैनिक जीवन कौशल आदि शामिल हैं– समावेशी शिक्षा की गुणवत्ता का एक प्रमुख संकेतक है। इस अध्ययन में शिक्षक प्रभावशीलता, समावेशी शैक्षिक व्यवहार और अभिभावक–विद्यालय सहभागिता जैसे तीन महत्वपूर्ण कारकों का भारतीय शैक्षिक संदर्भ में अनुभवजन्य परीक्षण प्रस्तुत किया गया है।

2. बौद्धिक विकलांगता और मनोसामाजिक अनुकूलन

बौद्धिक विकलांगता एक ऐसी स्थिति है, जिसमें व्यक्ति की बौद्धिक क्षमता एवं अनुकूलन व्यवहार औसत से बहुत कम

स्तर पर होती है और यह विकासात्मक काल में प्रकट होती है। अनुकूलन व्यवहार का आशय किसी व्यक्ति की सामाजिक समझ, स्व–देखभाल, संप्रेषण कौशल और सामाजिक उत्तरदायित्व की क्षमता से है। मनोसामाजिक अनुकूलन बौद्धिक विकलांगता वाले विद्यार्थियों की जीवन–गुणवत्ता में निर्णायक भूमिका निभाता है। Sparrow, Balla & Cicchetti (2005) के अनुसार, अनुकूलन व्यवहार– जैसे संप्रेषण, दैनिक जीवन कौशल और सामाजिकरणकृकिसी भी व्यक्ति के व्यवहारिक सुदृढ़ता और सामाजिक सहभागिता का प्रत्यक्ष संकेत हैं।

अन्य शोध बताते हैं कि अनुकूलन व्यवहार केवल अकेले जैविक या बौद्धिक क्षमता का परिणाम नहीं होता, बल्कि शैक्षिक अनुभवों, सामाजिक वातावरण, शिक्षक–विद्याथी संबंध तथा पारिवारिक समर्थन जैसे पर्यावरणीय कारकों से भी गहराई से प्रभावित होता है।

3. शिक्षक प्रभावशीलता और समावेशी व्यवहार

शिक्षक प्रभावशीलता को Hoy & Woolfolk (2001) ने "शिक्षक की अपनी क्षमता तथा विश्वास कि वह विद्यार्थियों के सीखने को प्रभावी ढंग से सहायता कर सकता है" के रूप में परिभाषित किया। शिक्षक प्रभावशीलता में शिक्षक की कक्षा–प्रबंधन क्षमता, संप्रेषण कौशल, शिक्षण–रणनीतियाँ एवं विद्यार्थी–सहभागिता को प्रेरित करने की क्षमता शामिल है।

समावेशी शैक्षिक व्यवहार उन शिक्षण प्रक्रियाओं और मान्यताओं का समुच्चय है जो विविधता का आदर करते हैं तथा सभी विद्यार्थियों को सीखने, खेलने और कक्षा–गत गतिविधियों में शामिल होने के समान अवसर प्रदान करते हैं। समावेशी व्यवहार के उदाहरणों में सहयोगात्मक अधिगम, लचीली शिक्षण रणनीतियाँ, व्यक्तिगत सहायता तथा संवेदनशील अनुशासन शामिल हैं। बौद्धिक विकलांगता वाले विद्यार्थियों के संदर्भ में अध्ययनों से ज्ञात हुआ है कि समावेशी शिक्षण व्यवहार और प्रभावी शिक्षक व्यवहार उनके आत्म–सम्मान, सीखने की रुचि और सामाजिक सहभागिता में महत्वपूर्ण वृद्धि करते हैं (Ainscow, Booth & Dyson, 2006)।

4. अभिभावक–विद्यालय सहभागिता का महत्व

अभिभावक–विद्यालय सहभागिता उस सक्रिय सहयोग को दर्शाती है जिसमें अभिभावक शिक्षा–संस्थाओं के साथ मिलकर विद्यार्थियों के शैक्षिक लक्ष्यों, गृह–अधिगम गतिविधियों और अन्य कार्यक्रमों में भाग लेते हैं। म्चेजमपद (1995) के मॉडल के अनुसार यह सहभागिता Parenting, Communicating, Volunteering, Learning at Home, Decision Making तथा Collaborating with Community जैसे छह आयामों में व्यक्त की जा सकती है। विशेष आवश्यकता वाले विद्यार्थियों के लिए यह सहभागिता और भी महत्वपूर्ण हो जाती है, क्योंकि घर और विद्यालय के बीच एक सकारात्मक साझेदारी से विद्यार्थियों को निरंतर समर्थन मिलता है, जिससे उनकी कक्षा–सहभागिता, नियमितता तथा सीखने की रुचि में वृद्धि होती है।

5. शोध–अंतराल

अंतरराष्ट्रीय शोधों में शिक्षक प्रभावशीलता, समावेशी व्यवहार और अभिभावक सहभागिता के सकारात्मक प्रभावों की रिपोर्ट उपलब्ध है, किंतु अधिकांश शोध सामान्य शिक्षा–परिसरों या विकसित देशों के संदर्भ में केंद्रित हैं। भारतीय विशेष शिक्षा–परिसरों, विशेषकर अर्ध–ग्रामीण क्षेत्रों और छोटे शैक्षिक संस्थानों में ऐसे अनुभवजन्य अध्ययनों की संख्या सीमित है। इसके अतिरिक्त, तीनों कारकों का संयुक्त प्रभाव बौद्धिक विकलांगता वाले विद्यार्थियों के मनोसामाजिक अनुकूलन एवं कक्षा–सहभागिता पर तुलनात्मक रूप से कम परीक्षण हुआ है, जिससे शिक्षण नीतियाँ और प्रभावी हस्तक्षेप प्रक्रियाएँ विकसित करने में बाधाएँ उत्पन्न होती हैं।

6. अध्ययन के उद्देश्य

1. शिक्षक प्रभावशीलता और बौद्धिक विकलांगता वाले विद्यार्थियों के मनोसामाजिक अनुकूलन के मध्य संबंध का विश्लेषण करना।
2. समावेशी शैक्षिक व्यवहार और विद्यार्थियों के अनुकूलन व्यवहार के मध्य सहसंबंध का परीक्षण करना।
3. अभिभावक–विद्यालय सहभागिता और विद्यार्थियों की कक्षा–सहभागिता के मध्य संबंध का अध्ययन करना।

7. परिकल्पनाएँ

- H1: शिक्षक प्रभावशीलता और बौद्धिक विकलांगता वाले विद्यार्थियों के मनोसामाजिक अनुकूलन के मध्य सकारात्मक एवं महत्वपूर्ण सहसंबंध होगा।
- H2: समावेशी शैक्षिक व्यवहार और विद्यार्थियों के अनुकूलन व्यवहार के मध्य सकारात्मक एवं महत्वपूर्ण सहसंबंध होगा।
- H3: अभिभावक–विद्यालय सहभागिता विद्यार्थियों की कक्षा–सहभागिता को सकारात्मक रूप से प्रभावित करेगी।

8. शोध–विधि

8.1 शोध–अभिकल्प

वर्णनात्मक–सहसंबंधात्मक शोध अभिकल्प अपनाया गया, क्योंकि उद्देश्य किसी हस्तक्षेप का परीक्षण नहीं, बल्कि विद्यमान स्थितियों और चरों के मध्य सम्बन्धों का सांख्यिकीय विश्लेषण करना था।

8.2 प्रतिदर्श–

उद्देश्यपूर्ण प्रतिदर्श विधि द्वारा 30 बौद्धिक विकलांगता वाले विद्यार्थी (हल्की से मध्यम स्तर), 10 शिक्षक और 15 अभिभावक को शामिल किया गया।

8.3 उपकरण

प्रस्तुत अध्ययन में शिक्षक प्रभावशीलता, समावेशी शैक्षिक व्यवहार, विद्यार्थियों के अनुकूलन व्यवहार तथा अभिभावकदृ विद्यालय सहभागिता के मापन हेतु अंतरराष्ट्रीय स्तर पर मान्य एवं विश्वसनीय मापनियों का प्रयोग किया गया। इन मापनियों का चयन उनके सैद्धांतिक आधार, मनोवैज्ञानिक विश्वसनीयता एवं पूर्ववर्ती शोधों में व्यापक उपयोग को ध्यान में रखते हुए किया गया है। प्रत्येक मापनी का संक्षिप्त विवरण निम्नलिखित हैकृ

1. Teacher Sense of Efficacy Scale (TSES)

उद्देश्य–

Teacher Sense of Efficacy Scale का प्रयोग शिक्षकों की स्व–प्रभावशीलता (Teacher Self&Efficacy) का आकलन करने हेतु किया गया। यह मापनी इस बात का मूल्यांकन करती है कि शिक्षक स्वयं को विद्यार्थियों के अधिगम, कक्षा–प्रबंधन तथा सहभागिता को प्रभावी रूप से प्रोत्साहित करने में कितना सक्षम मानते हैं।

विकास एवं स्वरूप–

इस मापनी का विकास Tschannen&Moran ,oa Anita Woolfolk Hoy (2001) द्वारा किया गया था। अध्ययन में इसका 24–मदीय दीर्घ रूप प्रयोग किया गया, जिसकी स्कोरिंग 9–बिंदु स्पामतज स्केल पर की जाती है (1= Nothing से 9 (A Great Deal).

प्रमुख आयाम–

- **विद्यार्थी सहभागिता–**

यह आयाम शिक्षक की उस क्षमता को दर्शाता है जिसके द्वारा वह विद्यार्थियों को सीखने की प्रक्रिया में सक्रिय रूप से शामिल करता है, उनकी रुचि बनाए रखता है तथा प्रेरणा उत्पन्न करता है।

- **शिक्षण–रणनीतियाँ–**

इसमें शिक्षक की विभिन्न शिक्षण विधियों, अनुकूल रणनीतियों एवं वैकल्पिक उपायों का उपयोग करने की क्षमता का आकलन किया जाता है, विशेषकर विविध आवश्यकताओं वाले विद्यार्थियों के संदर्भ में।

- **कक्षा–प्रबंधन–**

यह आयाम शिक्षक की कक्षा में अनुशासन बनाए रखने, व्यवहार संबंधी समस्याओं को संवेदनशील ढंग से संभालने तथा सकारात्मक कक्षा–पर्यावरण विकसित करने की क्षमता को मापता है।

विश्वसनीयता एवं वैधता–

इस मापनी का Cronbach's alpha लगभग 0.90 पाया गया है, जो इसकी उच्च आंतरिक संगति को दर्शाता है। निर्माण वैधता एवं मानदंड वैधता पूर्ववर्ती अध्ययनों में कारक–विश्लेषण एवं शिक्षक प्रदर्शन से सहसंबंधों द्वारा प्रमाणित है।

2. Index for Inclusion

उद्देश्य–

Index for Inclusion का प्रयोग विद्यालयों में समावेशी शैक्षिक व्यवहारों एवं नीतियों के स्तर का मूल्यांकन करने हेतु किया गया। यह मापनी विद्यालयी संस्कृति, नीतिगत संरचना तथा कक्षा–स्तरीय व्यवहारों के माध्यम से समावेशन की स्थिति को समझने में सहायक है।

विकास एवं स्वरूप–

इस सूचकांक का विकास Tony Booth ,oa Mel Ainscow (2002) द्वारा किया गया। यह स्व–मूल्यांकन पर आधारित उपकरण है, जिसमें सूचकांक, कथन एवं मार्गदर्शक प्रश्न सम्मिलित होते हैं। स्कोरिंग सामान्यतः 4–बिंदु रेटिंग स्केल (Not at all ls Fully achieved) पर की जाती है।

प्रमुख आयाम–

- **समावेशी संस्कृति–**

यह आयाम विद्यालय में सम्मान, सहयोग, समानता एवं स्वीकृति की संस्कृति को मापता है, जिसमें सभी विद्यार्थियों को विद्यालय समुदाय का सक्रिय सदस्य माना जाता है।

- **समावेशी नीतियाँ–**

इसमें विद्यालय की नीतियों, नियमों एवं प्रशासनिक निर्णयों का आकलन किया जाता है, जो समावेशन को प्रोत्साहित करते हैं।

- **समावेशी अभ्यास–**

यह आयाम कक्षा–स्तरीय शिक्षण–अभ्यासों, सहयोगात्मक अधिगम, पाठ्यक्रम अनुकूलन एवं मूल्यांकन प्रक्रियाओं पर केंद्रित होता है।

विश्वसनीयता एवं वैधता–

Index for Inclusion dk Cronbach's alpha लगभग 0.86 से 0.90 के बीच पाया गया है। इसकी सामग्री वैधता न्छम्ैब्व द्वारा समर्थित है तथा विभिन्न सांस्कृतिक संदर्भों में इसके प्रयोग से निर्माण वैधता प्रमाणित हुई है।

3. Vineland Adaptive Behavior Scales (VABS)

उद्देश्य–

Vineland Adaptive Behavior Scales का प्रयोग बौद्धिक विकलांगता वाले विद्यार्थियों के अनुकूलन व्यवहार का मानकीकृत आकलन करने हेतु किया गया। यह मापनी यह दर्शाती है कि विद्यार्थी अपने दैनिक जीवन, सामाजिक परिस्थितियों एवं संप्रेषण में कितनी प्रभावशीलता से कार्य कर पाते हैं।

विकास एवं स्वरूप–

इस मापनी का संशोधित संस्करण Sara S. Sparrow, David A. Balla ,oa Domenic V. Cicchetti (2005) द्वारा विकसित किया गया। इसमें संरचित साक्षात्कार एवं रेटिंग–आधारित प्रश्नावली शामिल होती है। कच्चे स्कोरों को आयु–आधारित मानक स्कोरों में परिवर्तित किया जाता है।

प्रमुख आयाम–

- **संप्रेषण–**

इसमें भाषा–समझ, अभिव्यक्ति, सुनने–बोलने की क्षमता एवं सामाजिक संप्रेषण का आकलन किया जाता है।

- **दैनिक जीवन कौशल–**

यह आयाम स्व–देखभाल, व्यक्तिगत स्वच्छता, घरेलू कार्य एवं सामुदायिक कौशलों को मापता है।

- **सामाजिकरण–**

इसमें सामाजिक संबंध, समूह–व्यवहार, भावनात्मक प्रतिक्रियाएँ एवं सामाजिक नियमों के पालन की क्षमता का मूल्यांकन किया जाता है।

विश्वसनीयता एवं वैधता–

इस मापनी की Split-half reliability 0.80–0.90 के बीच पाई गई है। ज्मेज–तमजमेज तमसपंइपसपजल उच्च है तथा निर्माण एवं मानदंड वैधता प्फ एवं नैदानिक अनुकूलन सूचकों से सहसंबंधों द्वारा प्रमाणित है।

4. Parent–School Partnership Scale

उद्देश्य–

Parent–School Partnership Scale का प्रयोग अभिभावक–विद्यालय सहभागिता के स्तर का आकलन करने हेतु किया गया। यह मापनी विद्यालय और परिवार के बीच सहयोगात्मक संबंधों तथा सहभागिता की प्रकृति को मापती है।

विकास एवं स्वरूप–

यह मापनी Joyce L. Epstein (1995) के सैद्धांतिक मॉडल पर आधारित है। इसमें सामान्यतः 5–बिंदु स्पामतज स्केल (Strongly Disagree ls Strongly Agree) का प्रयोग किया जाता है।

प्रमुख आयाम–

- Parenting: अभिभावकों द्वारा घर पर सीखने का समर्थन एवं सकारात्मक वातावरण।

- Communicating: विद्यालय और अभिभावकों के बीच नियमित एवं प्रभावी संवाद।
- Volunteering: विद्यालयी गतिविधियों में अभिभावकों की सक्रिय भागीदारी।
- Learning at Home: घर पर शैक्षिक गतिविधियों में सहयोग।
- Decision Making: विद्यालयी निर्णय–प्रक्रियाओं में अभिभावकों की सहभागिता।
- Collaborating with Community: समुदाय और विद्यालय के बीच सहयोग।

विश्वसनीयता एवं वैधता–

इस मापनी का Cronbach's alpha लगभग 0.84–0.90 के बीच पाया गया है। निर्माण वैधता कारक–विश्लेषण तथा मानदंड वैधता विद्यार्थी उपलब्धि एवं सहभागिता से सहसंबंधों द्वारा प्रमाणित है।

8.4 आँकड़ा–संग्रह एवं विश्लेषण

डेटा को Likert-scale आधारित प्रश्नावली द्वारा संकलित किया गया। विश्लेषण में Mean, SD, t&test और Pearson सहसंबंध तकनीकें शामिल थीं।

9. परिणाम–

9.1 परिणाम तालिका: शिक्षक प्रभावशीलता बनाम मनोसामाजिक अनुकूलन

गुणक	उच्च प्रभावशीलता समूह (N=15)	निम्न प्रभावशीलता समूह (N=15)	t-मान	p-मूल्य
औसत स्कोर (Mean)	82.47	70.12	4.56	<0.01
मानक विचलन (SD)	5.82	8.10		

विश्लेषण: उच्च शिक्षक प्रभावशीलता समूह के विद्यार्थियों का औसत मनोसामाजिक अनुकूलन स्कोर (Mean=82.47) निम्न समूह (Mean=70.12) की तुलना में उच्च पाया गया। t–मान 4.56 है और p–मूल्य <0.01 स्तर पर महत्वपूर्ण है, जो दर्शाता है कि दोनों समूहों के बीच सांख्यिकीय रूप से महत्वपूर्ण अंतर मौजूद है।

9.2 परिणाम तालिका: समावेशी व्यवहार एवं अनुकूलन व्यवहार के मध्य सहसंबंध

चर	Pearson r	महत्व स्तर
समावेशी व्यवहार × अनुकूलन व्यवहार	0.68	p < 0.01

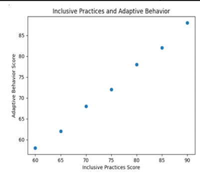

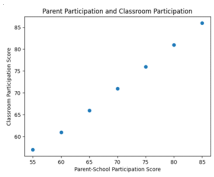

विश्लेषण: समावेशी शैक्षिक व्यवहार और अनुकूलन व्यवहार के मध्य Pearson सहसंबंध गुणांक 0.68 पाया गया, जो मध्यम से उच्च सकारात्मक संबंध को इंगित करता है और p–मूल्य ढ0.01 स्तर पर सांख्यिकीय रूप से महत्वपूर्ण है।

9.3 परिणाम तालिका: अभिभावक सहभागिता एवं कक्षा–सहभागिता

विश्लेषण: अभिभावक–विद्यालय सहभागिता और कक्षा–सहभागिता के मध्य r=0.61 का सकारात्मक सहसंबंध प्राप्त हुआ, जो p<0.01 स्तर पर महत्वपूर्ण है। इससे यह स्पष्ट होता है कि अधिक सक्रिय अभिभावक सहभागिता वाली परिस्थितियों में विद्यार्थियों की कक्षा–सहभागिता अधिक होती है।

10. विवेचन–

10.1 शिक्षक प्रभावशीलता एवं अनुकूलन

प्राप्त परिणाम स्पष्ट रूप से दिखाते हैं कि शिक्षक प्रभावशीलता और विद्यार्थियों के मनोसामाजिक अनुकूलन के मध्य सकारात्मक सहसम्बंध है। यह निष्कर्ष Hoy & Woolfolk (2001) के तर्क का समर्थन करता है कि शिक्षक का आत्म–विश्वास, कक्षा–प्रबंधन कौशल और सकारात्मक दृष्टिकोण विद्यार्थियों के सीखने और सामाजिक व्यवहार को बढ़ावा

देता है। उच्च शिक्षक प्रभावशीलता वाले कक्षाओं में अधिक व्यक्तिगत समर्थन, संवाद कौशल और सीखने के अवसर उपलब्ध होते हैं, जिससे विद्यार्थी आत्म–विश्वास, संप्रेषण कौशल तथा सामाजिक सहभागिता में बेहतर प्रदर्शन करते हैं।

इसके अतिरिक्त, Ainscow et al- (2006) के अध्ययन ने भी संकेत दिया कि समावेशी कक्षा–पर्यावरण और प्रभावी शिक्षक व्यवहार बौद्धिक विकलांगता वाले विद्यार्थियों के सामाजिक स्वीकार्यता और आत्म–अभिव्यक्ति को सकारात्मक रूप से प्रभावित करते हैं।

10.2 समावेशी व्यवहार और अनुकूलन व्यवहार

समावेशी व्यवहार और अनुकूलन व्यवहार के मध्य उच्च सकारात्मक सहसंबंध यह इंगित करता है कि जब विद्यालय समावेशी नीतियों, लचीली शिक्षण–रणनीतियों एवं सहयोगात्मक कक्षा–संस्कृति को अपनाते हैं, तो विद्यार्थियों का अनुकूलन व्यवहार बेहतर विकसित होता है। यह निष्कर्ष Dyson & Millward (2000) के तर्कों के अनुकूल है, जिनका कहना था कि समावेशी शिक्षा विविध आवश्यकताओं को स्वीकार कर सीखने के अवसरों को बढ़ाती है और विद्यार्थियों के आत्म–अनुभव को सुदृढ़ करती है।

समावेशी व्यवहार से जुड़ी नीतियाँ जैसे Index for Inclusion (Booth & Ainscow, 2002) विद्यालय में समावेशन को केवल नाममात्र की प्रक्रिया न बनाकर व्यवहारिक एवं संरचनात्मक दृष्टिकोण से समर्थ बनाती हैं। इससे न केवल विद्यार्थियों का आत्म–सम्मान बढ़ता है बल्कि वे सामाजिक परिदृश्यों में अधिक सहजता से अनुकूलित होते हैं।

10.3 अभिभावक सहभागिता एवं कक्षा–सहभागिता

अभिभावक सहभागिता और कक्षा–सहभागिता के मध्य सकारात्मक सहसंबंध यह संकेत करता है कि घर और विद्यालय के बीच सहयोगात्मक संवाद तथा साझा निर्णय–निर्माण कक्षा में विद्यार्थी की सहभागिता और सीखने की प्रेरणा को बढ़ाता है। Epstein (1995) ने भी इस प्रकार की सहभागिता को शैक्षिक उपलब्धि और सकारात्मक शिक्षा–पर्यावरण के लिए महत्वपूर्ण बताया है। अभिभावक–विद्यालय सहभागिता न केवल विद्यालयी गतिविधियों तक सीमित रहती है, बल्कि यह विद्यार्थियों की आत्म–अनुभूति, दैनिक जीवन में सामाजिक व्यवहार और सीखने की प्रतिबद्धता को भी प्रभावित करती है। विशेष रूप से बौद्धिक विकलांगता वाले विद्यार्थियों के लिए यह सहभागिता निरंतर समर्थन, सुरक्षा की अनुभूति और घर–विद्यालय के बीच सामंजस्य स्थापित करने में सहायक होती है।

11. निष्कर्ष–

प्रस्तुत अनुभवजन्य अध्ययन से यह निष्कर्ष निकलता है कि शिक्षक प्रभावशीलता, समावेशी शैक्षिक व्यवहार और अभिभावक–विद्यालय सहभागिता बौद्धिक विकलांगता वाले विद्यार्थियों के मनोसामाजिक अनुकूलन एवं कक्षा–सहभागिता को सकारात्मक रूप से प्रभावित करते हैं। उच्च शिक्षक प्रभावशीलता और सकारात्मक समावेशी व्यवहार विद्यार्थियों की अनुकूलन क्षमता और सामाजिक सहभागिता को बढ़ाते हैं, जबकि अभिभावक सहभागिता कक्षा–सहभागिता और सीखने की प्रतिबद्धता को सुदृढ़ करती है।

12. शैक्षिक निहितार्थ–

- समावेशी शिक्षण–रणनीतियों, कक्षा–प्रबंधन और संप्रेषण कौशल पर आधारित सतत शिक्षक–प्रशिक्षण कार्यक्रम विकसित किए जाने चाहिए।
- विद्यालयी नीति निर्माताओं को Index for Inclusion जैसे उपकरणों के माध्यम से समावेशी संस्कृति का नियमित मूल्यांकन करना चाहिए।
- अभिभावक–विद्यालय सहभागिता को संरचित रूप से विकसित करने के लिए कार्यक्रम, बैठकें और साझा निर्णय–निर्माण प्रक्रियाएँ लागू की जानी चाहिए।

13. सीमाएँ एवं भावी शोध–

यह अध्ययन एक सीमित नमूने और एक विशेष विद्यालय तक सीमित है। भविष्य में विस्तृत जनसंख्या, दीर्घकालिक अध्ययन और मिश्रित–पद्धति (mixed&methods) अभिकल्प द्वारा इौद्धिक विकलांगता वाले विद्यार्थियों के मनोसामाजिक अनुकूलन पर विद्यालयीय और पारिवारिक कारकों के प्रभाव को और गहराई से समझा जा सकता है।

Author's Declaration:

I/We, the author(s)/co-author(s), declare that the entire content, views, analysis, and conclusions of this article are solely my/our own. I/We take full responsibility, individually and collectively, for any errors, omissions, ethical misconduct, copyright violations, plagiarism, defamation, misrepresentation, or any legal consequences arising now or in the future. The publisher, editors, and reviewers shall not be held responsible or liable in any way for any

legal, ethical, financial, or reputational claims related to this article. All responsibility rests solely with the author(s)/co-author(s), jointly and severally. I/We further affirm that there is no conflict of interest financial, personal, academic, or professional regarding the subject, findings, or publication of this article.

संदर्भ–

1. Booth, T., & Ainscow, M. (2002). Index for inclusion: Developing learning and participation in schools. Bristol, UK: Centre for Studies on Inclusive Education.
2. Epstein, J. L. (1995). School/family/community partnerships: Caring for the children we share. Phi Delta Kappan, 76(9), 701–712.
3. Hoy, A. W., & Woolfolk Hoy, W. K. (2001). Teacher sense of efficacy: Capturing an elusive construct. Teaching and Teacher Education, 17(7), 783–805. https://doi.org/10.1016/S0742-051X(01)00036-1
4. Sparrow, S. S., Balla, D. A., & Cicchetti, D. V. (2005). Vineland adaptive behavior scales (2nd ed.). Circle Pines, MN: American Guidance Service.
5. Ainscow, M., Booth, T., & Dyson, A. (2006). Improving schools, developing inclusion. London: Routledge.
6. Dyson, A., & Millward, A. (2000). Schools and special needs: Issues of innovation and inclusion. London: Sage Publications.
7. Government of India. (2020). National Education Policy 2020. New Delhi: Ministry of Education, Government of India.
8. UNESCO. (1994). The Salamanca statement and framework for action on special needs education. Paris: UNESCO.
9. Mitchell, D. (2014). What really works in special and inclusive education: Using evidence-based teaching strategies (2nd ed.). London: Routledge.
10. Sharma, U., Loreman, T., & Forlin, C. (2012). Measuring teacher efficacy to implement inclusive practices. Journal of Research in Special Educational Needs, 12(1), 12–21. https://doi.org/10.1111/j.1471-3802.2011.01200.

Cite this Article-

'मो0 अफरोज आलम; प्रो० (डॉ०) पवन कुमार', "भारत में दलित महिलाओं के राजनीतिक विकास का एक अध्ययन', Research Vidyapith International Multidisciplinary Journal (RVIMJ), ISSN: 3048-7331 (Online), Volume:2, Issue:08, August 2025.

Journal URL- https://www.researchvidyapith.com/

DOI- 10.70650/rvimj.2025v2i800012

Published Date- 10 August 2025